United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

उषा प्रियंवदा की कहानियों में पारिवारिक संबंध

डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि
बी वरूणि
शोधार्थी, शोधनिदेशक एवं विभागाध्यक्ष,
पिठापुर राजा शासकीय महाविद्यालय, पिठापुर शासकीय महाविद्यालय,
आदिवि नन्नया विश्वविद्यालय से संबद्ध, काकिनाडा

उषा प्रियंवदा जी का परिचय :

प्रवासी साहित्यकार उषा प्रियंवदा जी आधुनिक हिंदी साहित्य की एक प्रमुख उपन्यासकार, कहानीकार हैं। इनका जन्म 24 दिसंबर 1930, उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में पी-एच.डी. की और अमेरिका के विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई विभाग की प्रोफेसर रहीं। हिंदी और अंग्रेजी, दोनों ही भाषाओं में समान रूप से दक्ष उषा प्रियंवदा ने साहित्य-सृजन के लिए हिंदी तथा समीक्षा, अनुवाद व अन्य बौद्धिक कार्यों के लिए अंग्रेजी का चयन किया।

प्रकाशितपुस्तकें:

उपन्यास : पचपन खंभे लाल दीवारें (1961), रुकोगी नहीं राधिका (1966), शेष यात्रा (1984), अन्तर्वंशी (2000), भया कबीर उदास (2007), नदी (2013)

कहानी-संग्रह : फिर बसंत आया (1961), जिंदगी और गुलाब के फूल (1961), एक कोई दूसरा (1966), कितना बड़ा झूठ, मेरी प्रिय कहानियाँ, शून्य एवं अन्य रचनाएँ (1997) तथा संपूर्ण कहानियाँ (2006)

इसके अतिरिक्त भारतीय साहित्य, लोककथाओं एवं मध्यकालीन भक्ति-काव्य पर अनेक लेख, जो अंग्रेजी में समय-समय पर प्रकाशित हुए। मीराबाई और सूरदास के अंग्रेजी अनुवाद साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से पुस्तक रूप में प्रकाशित किए। अनेक आधुनिक हिंदी कहानियों के अनुवाद भी किए। इंडियन स्टडीज विभाग से संलग्न रहते हुए 1977 में उन्हें 'फुल प्रोफेसर ऑफ इंडियन लिटरेचर' का पद मिला। 2002 में अवकाश लेने के बाद पूरा समय लेखन, अध्ययन और बागबानी में बिता रही हैं।

रोमांटिक उषा प्रियंवदा कहानियों की विशेषता है जो आप्लावित कर देने वाली लहर की तरह उमड़ती है और पाठक के भीतर उदासी की कितनी ही बंदिशों को भर देती है। चूँकि उल्लास की तरह उदासी का भी अपना एक सुनिश्चित आकार और आस्वाद होता है, इसलिए वह अपने को गहराने की क्रमिक अन्तयात्रा में अपने व्यक्तित्व की बुनियाद को पहचानने, परिवेश के साथ सम्बन्धों की संगति को बैठाने और बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने को अधिक जीवन्त और मानवीय बनाने की साधना का काम भी है।

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

पारिवारिक संबंधों में दरार और अकेलापन :

उषा प्रियंवदा की प्रख्यात कहानी 'वापसी' एक रिटायर्ड व्यक्ति गजाधर बाबू के अकेलेपन की कहानी है। गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी के बाद रिटायर होकर अपने परिवार के बीच लौटते हैं, जहाँ उनकी पत्नी, विवाहित बेटा अमर और उसकी पत्नी, छोटा बेटा नरेंद्र, बेटी बसंती रहती है।

गजाधर बाबू के लौटने से घर की पहले से चली आ रही व्यवस्था में व्यवधान पड़ जाता है। वे जिस आनंदमय और भावनात्मक स्वागत की उम्मीद अपनी पत्नी और बच्चों से कर रहे थे, वैसा कुछ नहीं होता।

सभी को ऐसा महसूस होता है कि गजाधर बाबू उनकी जिंदगी में दखल दे रहे हैं। परिवार के सब जनों को उनके बिना रहने की आदत पड़ गई थी। घर का नया बदला हुआ माहौल परिवार वालों को हज़म नहीं हुआ। खुद अपने ही परिवार के लिए गजाधर बाबू बोझ बन चुके थे।

बेटे अमर ने यूँ तक कह दिया कि,

"बूढ़े आदमी हैं, चुपचाप पड़े रहें हर चीज में दखल क्यों देते हैं।"

पहले नौकरी की वजह से परिवार से दूर रह वे एकदम अकेले थे। रेलवे क्वार्टर में उनके साथ एक गणेशी था जो अपना न होते हुए भी गजाधर बाबू के लिए गरम-गरम पूरियाँ और जलेबी बनाता था। अब अपने ही घर में अपनों के साथ होते हुए भी अकेले ही रह गए। खुद की पत्नी भी उनको न समझ पायी। रिश्तों में दरार आ चुके थे।

'जिंदगी और गुलाब के फूल' (कहानी संग्रह) एक महत्वपूर्ण हिंदी कहानी है जो समाज, संस्कृति और आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं को छूती है। समाज की विभिन्न समस्याएँ, स्थितियाँ और पीढ़ीगत अंतर का स्पष्ट चित्र दिखाई पड़ता है।

इस कहानी में नायक सुबोध अपने अफसर की अपमानजनक बात सुनकर आत्मसम्मान की रक्षा के लिए नौकरी से इस्तीफा दे देता है। उसकी बहन वृन्दा जैसे-तैसे बी.ए., एल.टी. कर वह मास्टरनी बन जाती है। अब घर के सारे फैसले लेने का अधिकार वृन्दा का हो जाता है। हालात ऐसे हो गए, एक दिन सुबोध की माँ कहती है कि,

"वृन्दा को रोज स्कूल जाने में देर हो जाती है, अपनी अलार्म घड़ी दे दो सुबोध।"

यहाँ स्पष्ट है कि पीढ़ियों से चली आ रही स्त्री के प्रति जो भावनाएँ और प्रतिबंध थे, उनमें बदलाव आ चुके हैं। जिन सदियों में घर की बेटियों को जहाँ रसोई संभालना पड़ता था, वे आज काम पर जा रही हैं। दूसरी ओर जहाँ घर में सिर्फ लड़के का पैदा होना ही बहुत मायने रखता था, वहाँ आज की स्थिति में उन्हें नौकरी प्राप्त करने से ही सम्मान मिलता है।

भावनाओं का संघर्ष :

रिश्तों में प्रेम और द्वेष, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच फँसे हुए पात्रों का मानसिक द्वंद्व हमें उषा जी की कहानियों में देखने को मिलता है। जैसे

"वापसी" और "जिंदगी और गुलाब के फूल" कहानियों के पात्र गजाधर बाबू और सुबोध की मानसिक अवस्था बहुत ही दयनीय थी।
एक संदर्भ में सुबोध ने कहा —
"आज मैं बेकार हूँ, तो मुझसे नौकरों-सा बर्ताव किया जाता है। लानत है ऐसी जिंदगी पर।"
अपने आत्मसम्मान के लिए नौकरी छोड़ने वाला सुबोध, खुद के परिवार की नजरों में अपना सम्मान खो बैठा।

निष्कर्ष :

महिला सशक्तिकरण, सामाजिक अधिकार के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन और परिवारों में आया हुआ बदलाव भी रूप में सामने आता है। 'वापसी' कहानी से कह सकते हैं कि, अगर गजाधर बाबू परिवार के साथ रहते हुए पास में ही नौकरी करते तो शायद अकेलेपन का सामना नहीं करना पड़ता। 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में सुबोध अपने अफसर से सत्संबंध बनाए रखता या फिर जरा सा अपमान सह लेता तो घर में उसका सम्मान बनाए रहता।
निष्कर्षतः कह सकते हैं कि दोनों कहानियों में आधुनिक परिवारों की दशा को दर्शाया गया है।

संदर्भ सूची :

उषा प्रियंवदा – प्रतिनिधि कहानियाँ, भूमिका, पृष्ठ 4
उषा प्रियंवदा – प्रतिनिधि कहानियाँ, जिंदगी और गुलाब के फूल, पृष्ठ 24
उषा प्रियंवदा – प्रतिनिधि कहानियाँ, वापसी, पृष्ठ 29
उषा प्रियंवदा – प्रतिनिधि कहानियाँ, जिंदगी और गुलाब के फूल, पृष्ठ 21
उषा प्रियंवदा – प्रतिनिधि कहानियाँ, वापसी, पृष्ठ 34